सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तकासुर

ज़्यादा की होड़

पूरा सफ़र — वो दौड़ जो क़ब्रों पर ख़त्म होती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 102 • 8 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्हाकुमुत्-तकासुर
1. ज़्यादा की होड़ ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया।

हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर
2. यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों की ज़ियारत कर ली।

कल्ला सौफ़ त'लमून
3. हरगिज़ नहीं! अनक़रीब तुम जान लोगे।

कल्ला लौ त'लमून 'इल्मल्-यक़ीन
5. हरगिज़ नहीं! काश तुम यक़ीनी इल्म से जानते।

ल-तरवुन्नल्-जहीम
6. तुम ज़रूर जहन्नम को देखोगे।

सुम्म ल-तुस-अलुन्न यौम-इज़िन 'अनिन्-न'ईम
8. फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।

वो दौड़ जो ग़ाफ़िल कर देती है

बेटा, यह सूरह एक ही लफ़्ज़ से शुरू होती है जो एक पूरी तहज़ीब की बीमारी की तशख़ीस कर देता है: 'अल्हाकुमुत्-तकासुर।'

'तकासुर', बेटा, 'कसरत' से है — ज़्यादा होना। और इस लफ़्ज़ का सीग़ा आपस में मुक़ाबले का मतलब देता है: सिर्फ़ ज़्यादा चाहना नहीं, बल्कि दूसरों से ज़्यादा चाहना। जमा करने की होड़। ढेर लगाना, और फिर अपने ढेर को दूसरे के ढेर से मिलाना।

और 'अल्हाकुम' का मतलब है: इसने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया, भटका दिया, मसरूफ़ और बहलाए रखा। इसका मादा 'लह्व' वही लफ़्ज़ है जो तफ़रीह के लिए इस्तेमाल होता है — कोई चीज़ जो आपको इतनी ख़ुशगवार तरीक़े से मसरूफ़ रखे कि वक़्त गुज़रने का पता ही न चले।

बेटा, पूरी आयत यही है: 'ज़्यादा हासिल करने की होड़ ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया।' यह

नहीं कहा 'तबाह कर दिया' — ग़ाफ़िल कर दिया। क्योंकि होता बिल्कुल ऐसा ही है। यह बर्बादी महसूस नहीं होती; यह ऐम्बिशन लगती है, तरक़्क़ी लगती है, एक मसरूफ़ और भरपूर ज़िंदगी लगती है।

उलमा ज़िक्र करते हैं कि मक्का के कुछ क़बीले वाक़ई तादाद में मुक़ाबला करते थे — एक ख़ानदान फ़ख़्र करता कि उसके पास दूसरे से ज़्यादा मर्द हैं — और जब ज़िंदा लोग कम पड़ जाते, तो वो क़ब्रिस्तान जा कर अपने मुर्दे गिनते थे ताकि बहस जीत सकें।

बेटा, हम इस पर हँसते हैं — और फिर वही काम दूसरे पैमानों से करते हैं। स्क्वेयर फ़ीट। तनख़्वाह। फ़ॉलोअर्स। स्कूल की फ़ीस। गेट पर खड़ी गाड़ियाँ। छुट्टियों की तस्वीरें। पैमाने बदल जाते हैं; बीमारी बिल्कुल वही है: मेरा ढेर आपके ढेर के मुक़ाबले में।

यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों की ज़ियारत कर ली

'हत्ता ज़ुर्तुमुल-मक़ाबिर — यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों की ज़ियारत कर ली।'

बेटा, यही उस मुक़ाबले की आख़िरी लकीर है। रिटायरमेंट नहीं, सीढ़ी की चोटी नहीं — क़ब्रिस्तान। दौड़ उस वक़्त ख़त्म होती है जब दौड़ने वाले को उठाकर बाहर ले जाया जाता है।

और अल्लाह का चुना हुआ लफ़्ज़ देखिए: 'ज़ुर्तुम' — तुमने ज़ियारत की। बेटा, ज़ियारत करने वाला वो होता है जो ठहरता नहीं। यानी क़ब्र ख़ुद आख़िरी पता नहीं है; यह रास्ते का एक पड़ाव है। आप इसकी ज़ियारत करते हैं, और फिर आगे बढ़ जाते हैं उस तरफ़ जो इसके बाद है।

सुब्हानल्लाह, बेटा — एक लफ़्ज़ में अल्लाह ने दो बातें बता दीं: यह कि दुनिया की दौड़ क़ब्रिस्तान पर ख़त्म होती है, और यह कि क़ब्रिस्तान सिर्फ़ एक इंतिज़ार-गाह है।

'कल्ला सौफ़ त'लमून — हरगिज़ नहीं! तुम अनक़रीब जान लोगे। सुम्म कल्ला सौफ़ त'लमून — फिर हरगिज़ नहीं! तुम अनक़रीब जान लोगे।'

बेटा, तिकरार देखिए, और उस सुकून को देखिए। अल्लाह जमा करने वाले से बहस

नहीं करते, न दौलत की बेकारी के आँकड़े गिनवाते हैं। वो बस दो बार फ़रमाते हैं: तुम ख़ुद पता कर लोगे। उलमा कहते हैं कि तिकरार दो लम्हों की तरफ़ इशारा करती है — मौत के वक़्त, और फिर दोबारा ज़िंदा होने पर।

और इस सुकून में कुछ ऐसा है जो डरा देता है। यह उस शख़्स का लहजा है जो अंजाम जानता है और इस बात पर मुतमइन है कि आप ख़ुद देख लें।

यक़ीन के तीन दर्जे

'कल्ला लौ त'लमून 'इल्मल्-यक़ीन — हरगिज़ नहीं! काश तुम 'इल्मुल-यक़ीन — यक़ीन के इल्म से जानते।'

बेटा, यहाँ क़ुरआन एक क़ीमती चीज़ सामने लाता है: यक़ीन के तीन दर्जे, जो उलमा ने इसी सूरह और सूरह अल-वाक़िआ से निकाले हैं।

'इल्मुल-यक़ीन — यक़ीन का इल्म: आपको कोई क़ाबिल-ए-ए'तिमाद ज़रिया किसी चीज़ की ख़बर देता है और आप मान लेते हैं। आपने आग कभी नहीं देखी, मगर एक सच्चा शख़्स उसका बयान करता है और आपको यक़ीन है कि वो जलाती है।

'ऐनुल-यक़ीन — यक़ीन की आँख: आप उसे अपनी आँखों से देख लेते हैं। सूरह आगे कहती है: 'ल-तरवुन्नल्-जहीम — तुम ज़रूर जहन्नम को देखोगे — सुम्म ल-तरवुन्नहा 'ऐनल्-यक़ीन — फिर तुम उसे यक़ीन की आँख से देखोगे।'

और हक़्क़ुल-यक़ीन — यक़ीन की हक़ीक़त: आप उसे बराह-ए-रास्त भुगतते हैं, उसे छू लेते हैं, आप उसमें होते हैं।

बेटा, समझिए यह आयत क्या पेश कर रही है: इस वक़्त आपके पास पहला दर्जा है — आपको अल्लाह ने, सच्चाई के साथ, ख़बर दे दी है। दूसरा और तीसरा दर्जा आ रहा है, चाहे आप तैयारी करें या न करें।

और बात यही है: वही का पूरा मक़सद यह है कि आप पहले दर्जे पर अमल कर लें, ताकि दूसरा और तीसरा दर्जा आपको तबाह न करे। अक़लमंद शख़्स एक सच्ची ख़बर पर अपना रवैया बदल लेता है; बेवक़ूफ़ उस वक़्त तक इंतिज़ार करता है जब तक

अपनी आँखों से न देख ले — और तब तक कुछ बदलने का वक़्त नहीं बचता।

बेटा, हम सेहत की तंबीहों के साथ, डॉक्टर के मशवरों के साथ, किसी तजुर्बेकार बड़े की नसीहत के साथ बिल्कुल यही करते हैं। हम जानते हैं — और देखने का इंतिज़ार करते हैं। यह आयत कहती है: इंतिज़ार मत कीजिए।

तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा

और फिर सूरह क़ुरआन की सबसे झिंझोड़ देने वाली आयतों में से एक पर ख़त्म होती है: 'सुम्म ल-तुस-अलुन्न यौम-इज़िन 'अनिन्-न'ईम — फिर उस दिन तुमसे न'ईम के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा — नेमतों, आराम, और अताओं के बारे में।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: सवाल सिर्फ़ हमारे गुनाहों के बारे में नहीं है। यह हमारी नेमतों के बारे में है। 'तुमने क्या बुरा किया?' नहीं — बल्कि 'जो मैंने तुम्हें दिया था, उसका तुमने क्या किया?'

और एक हदीस है जो दिखाती है कि यह दायरा कितना वसीअ है। एक रात नबी ﷺ बाहर निकले और अबू बक्र और उमर (रज़ि0) को पाया — और वो भूख की वजह से निकले थे। आप ﷺ उन्हें एक अंसारी सहाबी के घर ले गए, जिन्होंने ख़ुश-आमदीद कहा और ताज़ा खजूरें लाईं, और उनके लिए एक बकरी ज़िबह की, और उन्होंने खाया और ठंडा पानी पिया। और जब वो फ़ारिग़ हुए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, क़ियामत के दिन तुमसे इस नेमत के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा — भूख तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाल लाई थी, और तुम उस वक़्त तक नहीं लौटे जब तक यह नेमत न मिल गई।'

बेटा, इसे ज़ेहन में उतारिए। कोई महल नहीं। कोई ख़ज़ाना नहीं। खजूर, गोश्त और ठंडा पानी, भूखे लोगों को दिया गया — और उसके बारे में भी पूछा जाएगा।

तो हमारे लिए इसका क्या मतलब है, हमारे भरे हुए फ़्रिज, साफ़ पानी वाले नल, हमारे फ़ोन, हमारी दवाइयाँ, हमारा अमन? इनमें से हर एक 'न'ईम' है, और हर एक के बारे में पूछा जाएगा।

और बेटा, इसे सिर्फ़ ख़ौफ़ के तौर पर मत पढ़िए। इसे इस बात की नई तारीफ़ के तौर पर पढ़िए कि नेमत आख़िर है क्या। ज़्यादातर लोग तो इन चीज़ों को नेमत समझते ही नहीं — उन्हें सिर्फ़ वो नज़र आता है जो मौजूद नहीं। यह आयत आपको सच बता रही है: जिन आम चीज़ों पर आपकी नज़र भी नहीं पड़ती, वो इतनी अहम हैं कि अल्लाह आपसे ज़ाती तौर पर उनके बारे में पूछेंगे।

तो इस सवाल की तैयारी कैसे हो? नेमतों को उस तरह इस्तेमाल कर के जिस तरह देने वाले ने चाहा: खाइए, और उनका शुक्र कीजिए; तंदुरुस्त रहिए, और सेहत को इताअत में लगाइए; माल हो, तो उसमें से दूसरों के हुक़ूक़ बहने दीजिए; फ़ारिग़ वक़्त हो, तो उसका कुछ हिस्सा इबादत में डालिए। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि दो नेमतें ऐसी हैं जिनमें बहुत लोग धोके में रहते हैं: सेहत और फ़ारिग़ वक़्त। 'धोका', बेटा — यानी बुरा सौदा, क़ीमती चीज़ मिली और बदले में कुछ न मिला।

और यूँ सूरह अपना दायरा मुकम्मल करती है: इसकी इब्तिदा उस आदमी से हुई जो अपने पड़ोसी को हराने के लिए अपना माल गिन रहा था, और इसका इख़्तिताम उसी पर होता है कि वो अल्लाह के सामने खड़ा है और उससे पूछा जा रहा है कि उसने उन चीज़ों का क्या किया।

बेटा, एक आख़िरी बात। रिवायत है कि जब नबी ﷺ ने 'अल्हाकुमुत्-तकासुर' पढ़ा तो फ़रमाया: 'इब्ने आदम कहता है: मेरा माल, मेरा माल। हालाँकि तुम्हारे माल में से तुम्हारा सिर्फ़ वही है जो तुमने खाया और ख़त्म कर दिया, या जो तुमने पहना और पुराना कर दिया, या जो तुमने सदक़ा किया और आगे भेज दिया।' बाक़ी सब, आप ﷺ ने फ़रमाया, जा रहा है और दूसरों के लिए छोड़ा जा रहा है।

जब भी यह दौड़ आपको खींचे, इसे पढ़ लीजिए: जो खाया वो ख़त्म, जो पहना वो पुराना — और सिर्फ़ जो दिया, वही असल में अभी तक आपका है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. बीमारी रखना नहीं है, मुक़ाबला करना है — 'तकासुर' अपना ढेर दूसरे के ढेर से नापना है।

2. यह बर्बादी महसूस नहीं होती, ऐम्बिशन महसूस होती है — इसी लिए इसे ग़फ़लत कहा गया, तबाही नहीं।

3. दौड़ क़ब्रिस्तान पर ख़त्म होती है — और उसे भी ज़ियारत कहा गया, आख़िरी पता नहीं।

4. अभी 'इल्मुल-यक़ीन पर अमल कर लीजिए, ताकि 'ऐनुल-यक़ीन सदमे की तरह न आए।

5. सिर्फ़ गुनाहों का नहीं, नेमतों का भी हिसाब होगा — खजूर, गोश्त और ठंडे पानी तक का।

6. सेहत और फ़ारिग़ वक़्त वो दो नेमतें हैं जिनमें ज़्यादातर लोग धोका खा जाते हैं — इन्हें सोच समझ कर ख़र्च कीजिए।

7. अपने पूरे माल में से सिर्फ़ वो अभी तक आपका है जो आपने दे दिया।

या अल्लाह, हमें उस दौड़ से बचाइए जो ग़ाफ़िल कर देती है, और हमें अपनी अताओं का सही इस्तेमाल करके आपसे मिलने वाला बना दीजिए। आमीन।